



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 170] नई दिल्ली, मंगलवार, अगस्त 23, 1988/भाद्र 1, 1910
No. 170] NEW DELHI, TUESDAY, AUGUST 23, 1988/BHADRA 1, 1910

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Pageing is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली 23 अगस्त, 1988

अधिसूचना

सं. 26011/6/88-आश. सं. 1-—केंद्रीय सरकार, की जानकारी में यह आया है कि भारत के संविधान के प्रारंभ पर व्यक्तियों के कुछ ऐसे वर्गों की नागरिकता के बारे में जिनकी सामान्यतया भोरखा के रूप में जाना जाता है, जो ऐसे प्रारंभ पर भारत में बसे हुए थे, कुछ भ्रम हुआ है;

इस अधिनियम को दूर करना आवश्यक हो गया है और इसलिए निम्नलिखित रूप में यह स्पष्ट किया जाता है :

(1) संविधान के प्रारंभ से, अर्थात् 26-1-1950 से प्रत्येक गोरखा जिसका भारत के राज्य क्षेत्र में अर्थात् उन राज्य क्षेत्रों में जो 26-1-1950 को भारत के संविधान के अनुच्छेद 1(2) में परिभाषित भारत के राज्य क्षेत्र का भाग हो गए थे या उनका गठन करते थे, अधिवास था, और :-

(क) जो भारत के राज्य क्षेत्र में जन्मा था ; या

(ख) जिसके माता या पिता में से कोई भारत के राज्य क्षेत्र में जन्मा था ; या

(ग) जो ऐसे प्रारम्भ के पूर्व कम से कम ग्यारह वर्षों तक भारत के राज्य क्षेत्र में सामूची तौर से निवासी रहा था ;

भारत के संविधान के अनुच्छेद 5 में उल्लिखित भारत का नागरिक होगा ।

(2) पूर्वोक्त पैरा (1) में निर्दिष्ट ऐसा कोई व्यक्ति भारत का नागरिक नहीं होगा या भारत का नागरिक नहीं समझा जाएगा यदि उसने भारत के संविधान के अनुच्छेद 9 में उल्लिखित किसी विदेशी राज्य की नागरिकता स्वीकृति से राजिनामा कर ली है ।

(3) ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो यथा पूर्वोक्त संविधान के प्रारंभ पर भारत का नागरिक है, किसी ऐसी विधि के उद्देश्यों के अधीन रहने हुए जो भारत के संविधान के अनुच्छेद 10 में उल्लिखित संसद द्वारा बनायी जाए, भारत का नागरिक बना रहेगा ।

(4) नागरिकता अधिनियम, 1955 और उसके अधीन बनाए गए नियमों और आदेशों के उपबंध संविधान के प्रारंभ के पश्चात् पैरा (1) में निर्दिष्ट व्यक्तियों को लागू होंगे ।

इन्दिरा मिश्र, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi, the 23rd August, 1988

NOTIFICATION

No. 26011/6/88-IC, I.—Whereas it has come to the notice of the Central Government that there have been some misconceptions about the citizenship at the commencement of the Constitution of India, of certain classes of persons commonly known as Gorkhas, who had settled in India at such commencement ;

And whereas it is considered necessary to clear such misconceptions; it is hereby clarified as follows :

(1) As from the commencement of the Constitution, that is as from 26-1-1950, every Gorkha who had his domicile in the territory of India, that is, in the territories which on 26-1-1950 become part of or constituted the territory of India as defined in Article 1(2) of the Constitution of India, and—

(a) Who was born in the territory of India; or

(b) either of whose parents was born in the territory of India; or

(c) who had been ordinarily resident in the territory of India for not less than five years before such commencement shall be a citizen of India as provided in Article 5 of the Constitution of India.

(2) No such person as is referred to in paragraph (1) above shall be a citizen of India or be deemed to be a citizen of India if he has voluntarily acquired the citizenship of any foreign State, as provided in Article 9 of the Constitution of India.

(3) Every person who is a citizen of India at the commencement of the Constitution as aforesaid shall continue to be such a citizen subject to the provisions of any law that may be made by Parliament as provided in Article 10 of the Constitution of India.

(4) The provisions of the Citizenship Act, 1955 and the Rules and orders made thereunder shall apply to the persons referred to in paragraph (1) after the commencement of the Constitution.

INDIRA MISRA, Jt. Secy.

